श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल, राजस्थान का उद्‌बोधन

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की 150 वीं जयंती के अवसर पर दीपोत्सव का उद्‌घाटन एवं ई–पुस्तिका का लोकार्पण

दिनांक – 02 अक्टूबर, 2020 **समय – सांयः 06. 00 बजे**

स्थान – राजभवन

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलाधिपति प्रो. कमलेश दत्त त्रिपाठी जी, कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल, सांसद श्री रामदास तड़स, प्रतिकुलपति प्रो. हनुमानप्रसाद शुक्ल एवं दीपोत्सव व ई–पुस्तिका के लोकार्पण में ऑनलाइन एव ंऑफलाइन उपस्थित महानुभावगण, प्राध्यापकगण, विद्यार्थियों, भाइयों और बहिनों।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के अवसर पर विश्वविद्यालय परिसर व वर्धा की जनता द्वारा व्यापक स्तर पर दीपोत्सव का आयोजन किया गया है। गांधी जी की कर्मभूमि में इसे जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाना निश्चय ही राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के प्रति हमारी कृतज्ञता व श्रेष्ठ भावों कि अभिव्यक्ति है।

सत्य और अहिंसा के बल पर देश की आजादी में अपना सर्वस्व अर्पण करने वाले भारतभूमि पर अवतरित साधारण से मानव मोहन का असाधारण महात्मा बनना यूं ही नहीं सम्भव होता वरन् यह त्याग, करुणा, दया, अहिंसा जैसे मूल्यों पर आधारित एक संघर्षमयी गाथा की परिणति है। गांधी विचार नहीं वरन् व्यवहार है।

आज सौ वर्षों बाद भी उनके 150वीं जयंती के अवसर पर समूचा राष्ट्र उनके विचारों को आत्मसात करके उन्हें अपनी भावांजलि के माध्यम से याद कर रहा है। सत्य, अहिंसा के साथ ही सर्वोदय, सत्याग्रह, बह्मचर्य, अस्वाद, अस्तेय, अपरिग्रह, अभय, अस्पृश्यता निवारण, सर्वधर्म समभाव के आग्रही महात्मा गांधी न सिर्फ भारतवर्ष वरन् पूरे विश्व में सर्वाधिक आदर पाने वाले महान व्यक्तित्व हैं।

प्रख्यात वैज्ञानिक आइंस्टीन ने गांधी जी के बारे में कहा था कि 'आने वाली पीढियाँ इस बात पर गर्व करेंगी कि हाड़ मांस से बना हुआ कोई ऐसा व्यक्ति भी इस धरती पर चलता फिरता था।'

अपने दार्शनिक विचारों यथा सर्वोदय के माध्यम से महात्मा गांधी समाज के सभी वर्गों के सभी प्रकार से अर्थात् सामाजिक, राजनैतिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक उत्थान की बात करते हैं। सर्वोदय रूपी यह यात्रा पं. दीनदयाल उपाध्याय अन्त्योदय के द्वारा इस विश्वास के साथ आगे बढ़ाते हैं कि जब तक भारत में अंतिम व्यक्ति के चेहरे पर मुस्कान अर्थात् उसका उदय नहीं होगा, तब तक भारत एक खुशहाल एवं आदर्श व्यवस्था का देश नहीं हो सकता।

यह हार्दिक प्रसन्नता का विषय है कि विश्वविद्यालय द्वारा गांधी जी की 150वीं जयंती के पावन अवसर पर गांधी जी की पुस्तक 'मंगलप्रभात' को संस्कृत में अनुदित कर, ई–पुस्तिका के रूप में प्रकाशित की जा रही है।

इससे महात्मा गांधी के विचारों को आमजन तक पहुँचाने में सुलभता होगी। सांस्कृतिक एवं मानवीय मूल्यों के शाश्वत प्रतिनिधि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक विचारों की आज भी प्रासंगिकता बनी हुई है, क्योंकि आज समूचा विश्व मानवता के मार्गदर्शन के लिए छटपटाहट की अवस्था में है। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा कि बापू के विचार इसके लिए सर्वोत्तम प्रत्युत्तर के रूप में प्रासंगिक हैं।

गांधी ने स्वावलंबन एवं स्वदेशी जैसे महत्वपूर्ण विचारों के आधार पर आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना का सपना 100 वर्ष पहले देखा था उसे भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री आदरणीय श्री नरेंद्र मोदी ने कोरोना के दौर में भारत के जन हेतु गांधी के आर्थिक दृष्टि पर आधारित आत्मनिर्भर भारत रूपी राहत पैकेज देशवासियों के लिए प्रस्तुत किया।

गांधी जी ने स्वराज का सपना इसलिए देखा था ताकि एक ऐसा राज्य जहां शासक और शासित वर्ग के बीच किसी प्रकार का कोई भेद न हो, एक ऐसी आदर्श व्यवस्था जिसमें कोई भी व्यक्ति भूखा, नंगा, दुखी, विपन्न न हो। यही रामराज्य भी है, इसीलिए बापू दरिद्र नारायण की भी बात करते हैं।

गांधी की आर्थिक दृष्टि पर विचार करने पर ट्रस्टीशिप के रूप में एक आदर्श संकल्पना का दर्शन होता है जिसमें सत्ता के विकेंद्रीकरण की बात कही गई है। बापू का अटल विश्वास है– 'सबै भूमि गोपाल की, सब सम्पत्ति रघुबर के आही।' समूची वसुधा पर उपलब्ध भूमि पर सबका अधिकार है किसी एक का नहीं। गांधी के सर्वोदय में यह भाव चित्रित होता है। वैश्विक आपदा के इस दौर में महात्मा गांधी का दर्शन एवं महान विचार आज भी सभ्यताओं के संघर्ष में जहाँ दया, करुणा, अहिंसा पर आधारित सभ्यता ही बची हुई है, जिसका उदाहरण समूचे विश्व में देखने को मिल रहा है।

इस खतरे की आहट गांधी जी ने अपनी पुस्तक हिंद स्वराज में 1909 में ही कर दिया था। आज पुनः गांधी जी द्वारा दिए ग्रामीण सशक्तीकरण रूपी विचार की महत्ता उद्घाटित हुई है और आपदा के दौर में गाँव ही भारतीयों की उम्मीद एवं उनके आशा व आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए सहारा बना है।

हिंदी भाषा के बहुमुखी विकास के लिए समर्पित, हिंदीतर भाषी क्षेत्र, गांधी और विनोबा की कर्मभूमि वर्धा में स्थापित महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय हिंदी के संवर्धन के लिए निरंतर प्रयत्नशील है। विश्वविद्यालय का उद्देश्य हिंदी भाषा और साहित्य का संवर्धन एवं विकास करना और उस प्रयोजन के लिए विद्या की सुसंगत शाखाओं में शिक्षण एवं अनुसंधान की सुविधाएँ प्रदान करना, हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में अध्ययन और अनुसंधान के लिए समुचित व्यवस्था करना, देश और विदेश में सुसंगत सूचना के विकास एवं प्रसारण के लिए सुविधाएँ प्रदान करना है।

मुझे यह जानकर खुशी है कि हिंदी विश्वविद्यालय में भारत के विभिन्न हिस्सों के अलावा अध्ययन के लिए प्रति वर्ष सुदूर देशों से छात्र–छात्राओं का आगमन होता है और वे भिन्न–भिन्न अवधि के पाठ्यक्रम पूरा कर हिंदी के विकास में अपना योगदान करते हैं। विश्वविद्यालय हिंदी में विदेशी विद्यार्थियों के हिंदी शिक्षण के लिए यानी हिंदी के क्षितिज विस्तार के लिए निरंतर प्रयत्नशील है।

मुझे इस कार्यक्रम में शामिल किया, इसके लिए आयोजकों का आभार ज्ञापित करता हूं।

धन्यवाद। जयहिन्द।